

जोखिम का सामना - एक व्यावहारिक रास्ता*

हारुन आर. खान

श्री सुरेश सेनापति, श्री रिचर्ड रेखी, श्री दीपक पारीख, श्रीमती गीता वर्गीस आसीन तथा सामने की ओर आसीन अन्य गणमान्य अतिथियों। सीआईआई के इस महत्वपूर्ण कार्यक्रम में भाषण के लिए मिले निमंत्रण से मैं आह्लादित हूँ। ऐसा प्रतीत होता है कि सीआईआई ने इस राष्ट्रीय जोखिम शिखर सम्मेलन के लिए एक बहुत ही रोचक विषय- 'भारतीय कारपोरेट के भविष्य को जोखिम रहित बनाना' चुना है। निश्चय ही मैं इस बात पर आश्चर्य कर रहा हूँ कि सीआईआई भारतीय कारपोरेट के भविष्य को जोखिम रहित बनाने के लिए क्यों विचार कर रहा है, हालांकि, यहां मौजूद प्रतिभागी इस तथ्य को भी समझते होंगे कि जोखिम रहित का एक तात्पर्य यह भी होता है कि 'व्यापार' में उनके बने रहने के लिए व्यापार जैसा कुछ नहीं रह गया है।

वीयूसीएपी विश्व में जोखिम-प्रतिफल-प्रतिकार

सभी मानवीय कार्यकलापों, विशेष रूप से व्यापारिक गतिविधियों में जोखिम उठाना शामिल होता है, ताकि जोखिम-प्रतिफल(-) सरोकार के अनुरूप 'पुरस्कार' अथवा 'प्रतिफल' अर्जित किया जा सके। तथापि, यह संबंध कहीं अधिक गूढ़ है क्योंकि लाभ कमाने के पीछे की अंधी दौड़ के परिणामस्वरूप अकल्पनीय स्तर के जोखिम न केवल व्यक्तिगत उद्यमों के लिए वरन् समस्त प्रणाली के लिए पैदा हो सकते हैं। आज विश्व के वित्तीय और आर्थिक संतुलन के लिए खतरा पैदा करने वाले जोखिमों का उचित रूप से प्रबंधन करना और उन्हें नियंत्रण में रखना काफी कठिन हो गया है। मैं समझता हूँ कि त्वरित लाभ कमाने की प्रवृत्ति के साक्ष्य लगातार मौजूद हैं और शायद इस संगोष्ठी की पृष्ठभूमि में व्यापक ध्येय भी यही है।

जोखिम-प्रतिफल संबंधों के अत्यधिक प्रयुक्त दृष्टिकोण पर अपने विचारों का निर्माण करने के दौरान मैंने जोखिम-प्रतिफल समस्या में इसमें से गायब 'आर'- रीक्विटल(प्रतिपूर्ति)पर विचार किया। लाभ पाने के लिए अत्यधिक उत्कट उग्र मानवीय आकर्षण और इसकी तलाश में जोखिम मोल लेने की प्रायः प्रबल आदत के

कारण कई बार, दीर्घ काल में अपरिहार्य प्रतिफल और प्रतिपूर्ति के रूप में इसकी परिणति होती है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में, संभवतः यह जग प्रचलित रीति ही है जो हमें उतावला बना देती है। वैश्विक वित्तीय संकट का विकट प्रभाव देखने के बाद हम अपने भविष्य को जोखिम-रहित बनाने की शपथ लेना चाहेंगे। अमरीकी वित्तीय इतिहासकार पीटर बर्नेस्टिन का एक रोचक परिप्रेक्ष्य है, उनके अनुसार, 'जोखिम और समय एक ही सिक्के के दो विरोधी पहलू हैं, क्योंकि यदि भविष्य ही नहीं होगा तो कोई जोखिम भी नहीं होगा। समय जोखिम को परिवर्तित करता है, और जोखिम की प्रकृति का निर्धारण समय के क्षितिज द्वारा होता है: भविष्य ही क्रीडा स्थल है'¹। अतः हमारा तरीका समय के साथ जोखिम अनुकूलता सुनिश्चित करना होना चाहिए न कि भविष्य को जोखिम रहित बनाना होना चाहिए। वस्तुतः जोखिम निवारण की उन्मादी वचनबद्धता अपने आप में एक जोखिम है, जिसका सामना किसी व्यापार को संकट के बाद की स्थितियों में करना पड़ सकता है।

यद्यपि कि हमें वीयूसीए विश्व की चुनौतियों का सामना करने की रणनीति बनाना आवश्यक है। यह सैन्य शब्दकोष का एक हिस्सा है, यह उतार-चढ़ाव, अनिश्चितता, जटिलता और अस्पष्टता का संक्षिप्ताक्षर है, और अब इसका व्यापक उपयोग वैश्विक आर्थिक और वित्तीय बाजारों की अनिश्चितता बताने के लिए किया जाता है। मैं इसमें 'पी' और जोड़ना चाहूंगा, जिसका अर्थ है प्रतिकूलता (परवरसिटी), और इसके बाद यह वीयूसीएपी बन जाता है। समसामयिक वैश्विक अर्थव्यवस्था, वित्तीय बाजारों और संपूर्ण विश्व में सामरिक हस्तक्षेपों को ध्यान में रखते हुए यह बेमेल भी नहीं होगा।

पहले हम अत्यधिक उतार-चढ़ाव को टेड़ी नजरों से देखा करते थे, परंतु अब कम उतार-चढ़ाव से चिंतित हैं। हमें अस्थिरताओं से की चिंता अवश्य करनी चाहिए परंतु निश्चितता अपने साथ संतोष लाती है और हमें असुरक्षित बना देती है। क्या असलियत में हम जटिलताओं को लेकर असहज होते हैं? निश्चित नहीं है। कुछ के लिए जटिलता फायदे का सौदा होती है। और इन सब में संशय बरकरार है। भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा जारी की गई अद्यतन वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट (दिसंबर 2014), 'ऐसे परिवेश' के बारे में बताती है, 'जहां कमजोर संवृद्धि की संभावनाओं को भी वित्तीय बाजारों के लिए अनुकूल माना जाता है' क्योंकि इनसे उन संभावनाओं को बल मिलता है कि अत्यधिक सरल मौद्रिक नीतियां जारी रहेंगी, यह एक तरह से प्रतिकूलता है। परंतु, यही वो संसार है जिसके साथ हमें बर्ताव करना है।

* 10 फरवरी 2015 को मुंबई में भारतीय कारपोरेट के भविष्य को जोखिम रहित बनाने के संबंध में सीआईआई राष्ट्रीय जोखिम शिखर सम्मेलन में श्री हारुन आर. खान, उप-गवर्नर, भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा दिया गया मुख्य भाषण। वक्ता भारतीय रिजर्व बैंक के श्री आर. गुरुमूर्ति के योगदान पर हृदय से आभार व्यक्त करते हैं।

¹ ईश्वर के विरुद्ध

मेरा विचार है कि यह प्रकृति में ही है। आइए, उदाहरण के लिए प्राचीन मिस्र के एक धार्मिक विचार पर नज़र दौड़ाते हैं, जिसमें विषयवस्तु-नामतः व्यवस्था, अस्तव्यस्तता और पुनरारम्भ-बारंबार सामने आते हैं। प्रत्येक वर्ष नील नदी में बाढ़ आती है, परंतु फिर यह जमीन की उर्वरता बढ़ा देती है और अत्यधिक उत्पादक कृषि उद्योग की मदद करती है जिससे कि मिस्र की सभ्यता इतने दिनों तक बनी रही। किसी अन्य संकट की भांति ही, वैश्विक वित्तीय संकट ने हमें नई शिक्षा दी है और नए अवसर भी दिए हैं।

यहां 'P' और वहां 'R' जोड़ देने से इस संगोष्ठी की व्यापक विषयवस्तु को एक दृष्टिकोण मिल जाता है, आइए अब मैं कुछ विशिष्टताओं की ओर मुड़ता हूं।

व्यापार जोखिम और विनियामकीय दुविधा

विनियामक होने के नाते मैं वैधानिक और विनियामकीय जोखिमों के संबंध में व्यापारी समुदाय की चिंताओं से प्रारंभ करूंगा। जैसा कि मैं आपकी विज्ञापन पुस्तिका से देख सकता हूं कि इस पर चर्चा करने के लिए इसमें स्थान है और उसे सारांश में उसमें नीचे दिया गया है। जहां इसमें जटिल विनियामकीय नियमों और नए विधानों को लागू करने से कंपनियों को पेश आ रहे बढ़ते हुए जोखिमों बात की जा रही है वहीं इसमें इस ओर भी, ठीक, ही संकेत दिया गया है, इन्हें पिछले कुछ वर्षों के दौरान हुए कारपोरेट अनाचरणों और विकारों के कारण लाया गया था। ऐसा इसलिए भी है क्योंकि संगठन अभी तक की तुलना में कहीं अधिक व्यापार सीमा पार से कर रहे हैं; इस प्रकार, उनके स्थानीय विनियामकीय जोखिमों में वैश्विक विनियामकीय चिंताएं जुड़ जाती हैं। अतः यहां हम सभी कानून लागू करने वालों की एवं इन कानूनों और विनियमों से प्रभावित होने वाले, दोनों की चिंताओं को समझेंगे और महसूस करेंगे।

अक्सर, हम ऐसा सुनते हैं कि भारत में व्यापार करना कितना कठिन है। परंतु, कई समयांतरालों पर बहुदेशीय कंपनियों को ऐसी ही चिंताएं किसी अन्य स्थान पर व्यापार करने के लिए भी होती हैं। हाल ही में, म्यूनिख में आयोजित डीएलडी सम्मेलन में, निकोलस ब्रुसेसन, जो *ब्लाब्लाकार-फ्रांसीसी राइड-शेयरिंग नवीन शुरुआती कंपनी*, के सह-संस्थापक हैं, से 28 प्रकार के कानूनों और विनियमनों के साथ फ्रांस के बाहर अपने व्यापार की शुरुआत करने का कारण पूछा गया, तो उन्होंने उतर दिया कि: 'जब आप फ्रांस से प्रारंभ करते हैं तो सब कुछ सरल प्रतीत होता है'। मुझे विश्वास है कि पिछले दो वर्षों या अधिक के दौरान जिन भारतीय कंपनियों ने विदेशों में व्यापार किया है वे भी इन्हीं संवेदनाओं को दोहराएंगी। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में, भारत सरकार 'मेक इन इंडिया' पर जिस तेजी से बढ़ रही है उस पर

गंभीरता पूर्वक विचार करना अत्यधिक महत्वपूर्ण है, कि यह क्या कर सकता है।

हम यह मानेंगे कि अधिकतर समय विनियमित निकायों द्वारा ज्यादतियां बरतने या तथाकथित स्वयं-विनियमित तंत्र की अति-महात्वाकांक्षा के बाद ही विनियामकीय नियम आते हैं, न कि उनके पूर्व आ जाते हैं। विनियामक अपने कंधों पर जो भारी जिम्मेदारी रखते हैं वस्तुतः उसकी प्रकृति के कारण ही कार्रवाई होती है। एक शब्दावली जिसे 'विनियामकीय दुविधा' कहा जाता है, वित्तीय बाजार के विनियमन के संबंध में यह एक अंतहीन प्रक्रिया है, जिसमें विनियामक और विनियमित दोनों विनियमनों, वचना और पुनर्विनियमन की वैकल्पिक चालें चलते हैं।² यही बात अन्य बाजारों के लिए भी सत्य होती है।

विनियामकों की कार्यपद्धति किस प्रकार से निर्देशित हो, उसके लिए यह आवश्यक है कि जिन बाजारों को वे विनियमित करते हैं उनकी कार्यप्रणाली सहज रहे और स्थिरता सुनिश्चित हो सके न कि वह जन-संवेदनाओं से निर्देशित हो। दूसरे शब्दों में, जैसा कि फाइनेंशियल टाइम्स में कॉलम लिखने वाले *जॉन की* अक्सर कहते हैं कि, बुद्धिमत्तापूर्ण निर्णय को भीड़ के लिए रुचिकर विकल्प से नहीं बदला जा सकता है। 'इसीलिए हम जहाज उड़ाने के लिए एक कुशल पायलट पर विश्वास करते हैं न कि उसे यात्रियों के विचारों के औसत के आधार पर उड़ाते हैं, ऐसा उनका विद्वत विचार है।'

क्रेडिट का उपयोग और दुरुपयोग

इसमें मुझे कारपोरेट लीवरेज और मौजूदा क्रेडिट संस्कृति के संबंध में भारतीय रिज़र्व बैंक जैसे विनियामकों की व्यापक चिंताएं नज़र आती हैं। कुछेक कारपोरेट को निधियों के स्रोत जुटाने के संबंध में एक चुनौती का सामना करना पड़ सकता है- वो भी इसलिए नहीं कि स्रोत उपलब्ध नहीं हैं अथवा यह कि ऋण के लिए पात्र व्यापारिक अवसर उपलब्ध नहीं हैं बल्कि ऋण वितरण में 'कार्यक्षमता घटक' के रूप में अब एक नई विचारधारा पनप रही है और वह यह है कि उधारदाता उनकी प्रतिबद्धताओं पर कितना भरोसा करते हैं। इस बात की कहीं अधिक संभावना बन रही है कि आगे आने वाले दिनों में हितधारकों के अलावा, जमाकर्ताओं और कर दाताओं द्वारा बैंकों के क्रेडिट देने संबंधी निर्णय की और अधिक संवीक्षा की जाएगी। क्या यह सब इसलिए कि क्रेडिट संस्कृति में गिरावट आ रही है। हमें इसकी जांच करनी होगी।

² एडवर्ड केन- 'लूज एंड्स इन कैपिटल रेग्युलेशन: फेसिंग अप टु दि रेग्युलेटरी डायलेक्ट', अंतरराष्ट्रीय बैंकिंग सम्मेलन फेडरल रिज़र्व ऑफ शिकागो, नवंबर 11, 2011, शिकागो।

बैंक हमारी वित्तीय प्रणाली की रीढ़ हैं और वे एक महत्वपूर्ण कार्य करते हैं नामतः वित्तीय बचतों को उन्हें प्रदान करते जिन्हें उसकी जरूरत है। अतः मध्यस्थता की इस प्रक्रिया का दूसरा छोर क्रेडिट है और हम सभी को 'क्रेडिट' शब्द की व्युत्पत्ति को समझना होगा और उसके अर्थ को आदर देना होगा। इस स्थिति से निकलने का केवल एक ही रास्ता है और वो है क्रेडिट का उत्तरदायित्व सहित उपयोग करना।

जैसा कि गवर्नर राजन ने चेतावनी दी है³, संपूर्ण विश्व में सभी प्रकार के स्थापित करार किए गए मानदंडों के विरुद्ध, उद्यम में जोखिम और प्रतिफल की असमान भागीदारी है- जहां प्रवर्तकों के पास एक 'विशिष्ट' श्रेणी की ईक्विटी है जो अच्छे समय में सभी प्रकार के लाभों को रखती है और बुरे वक्त में बहुत कम हानियों से प्रभावित होती है, जबकि उधारदाताओं, हमारे संदर्भ में मुख्य रूप से सरकारी बैंकों, के पास "निम्न श्रेणी" के कर्ज होते हैं और उन्हें अच्छे समय में कुछ भी बेहतर प्रतिफल प्राप्त नहीं होते हैं, जबकि वे बुरे वक्त में अधिकतर हानियां सहते हैं।

आइए अब हम देखें कि किस प्रकार 'लीवरेज' नकारात्मकता की ओर बढ़ रहा है। कहा जा सकता है कि किसी प्रकार के व्यापार की वृद्धि के लिए लीवरेज एक प्रकार की आवश्यक बुराई है। तो हाल ही में कारपोरेट लीवरेज को वित्तीय स्थिरता के लिए एक चिंता के रूप में क्यों देखा जा रहा है? इस बात में कोई शक नहीं है कि भारतीय कंपनियों ने विश्व स्तरीय इंफ्रास्ट्रक्चर परियोजना बनाने, वैश्विक खिलाड़ियों के साथ कड़ी प्रतिस्पर्धा का सामना करने, देश की सीमाओं के परे अपने पंख पसारने में एक लंबी यात्रा तय की है। जहां उनमें कुछ को सफलता मिली तो उनमें से कुछ अन्य महात्वाकांक्षी अभिमानी सिद्ध हुए। उन्हें कार्यकलापों के लिए काफी बड़े स्रोतों की आवश्यकता थी, जो घरेलू और विदेशी वित्तीय बाजारों से प्राप्त हुए, हालांकि वैश्विक वित्तीय संकट, मांग में कमी और मुद्रा के उतार-चढ़ाव के परिणामस्वरूप उन्हें असंभावित जोखिमों का सामना करना पड़ा। क्या वे इन सब का पूर्वानुमान लगा सकते थे? वैश्विक वित्तीय संकट के पश्चात्, शायद भविष्य में वित्तीय क्षेत्र की कंपनियों की भांति ही, गैर-वित्तीय कंपनियां कुछ प्रकार की दबाव जांच के बारे में विचार कर सकती हैं ताकि उभरने वाले जोखिमों के प्रति उनकी आघात वहनीयता का अनुमान लगाया जा सके।

बचावरहित विदेशी मुद्रा एक्सपोजर के जोखिम

बड़े पैमाने पर बचावरहित विदेशी मुद्रा एक्सपोजर न केवल व्यक्तिगत निकायों के लिए खतरा है अपितु आर्थिक और

वित्तीय प्रणाली की स्थिरता के लिए भी चिंता का विषय है। हालांकि विनियामक निश्चित रूप से उन विषयों का माइक्रो प्रबंध नहीं करना चाहेंगे जो, कि देखा जाए तो, एक वाणिज्यिक गतिविधि है, फिर भी कारपोरेट को उनके बचाव रहित मुद्रा एक्सपोजरों में अंतर्निहित संभावित जोखिमों का ध्यान रखना आवश्यक है, क्योंकि असंभावित और अचानक हुए दर संचरणों के कारण उन्हें काफी अधिक लागत का सामना करना पड़ सकता है। आप सभी स्विस नेशनल बैंक के हाल के निर्णय के बारे में जानते होंगे जब भुक्तभोगियों के रोने-पीटने पर उसने भी कुछ अंश वहन किया था।

दूसरी ओर गवर्नर राजन ने कुछ समय पहले⁴ यह संकेत दिया था कि, विदेशी मुद्रा विनिमय दर में बढ़ोतरी के समय उधारकर्ता जाल में फंस सकते हैं क्योंकि बढ़ती हुई आस्ति कीमतों के कारण उन्हें उच्चतर ईक्विटी होने का भ्रम हो सकता है। यद्यपि हमारे पास पर्याप्त विदेशी मुद्रा भंडार है, फिर भी एक कठोर दृष्टिकोण यह है कि चरमसीमा पर पहुंचे बाह्य आघातों से इस प्रकार का कोई भी भंडार हमें मोहलत नहीं दे पाएगा। यही बात हम यहां देशों के बारे में कर रहे हैं। आप इस बात का अंदाजा लगा सकते हैं कोई कारपोरेट जिसके पास बहुत अधिक विदेशी मुद्रा एक्सपोजर होगा वह कितना अधिक संवेदनशील होगा।

जिन व्यापारिक निकायों के पास प्राकृतिक रूप से बचाव व्यवस्था नहीं है, उनके लिए विदेशी उधारियों हेतु मात्र ब्याज दर अंतर (बचाव लागत के बिना) के रूप में लागत लाभ एक निर्देशक घटक नहीं होना चाहिए। दूसरी ओर, हमारे पास इसका भी एक दुःखद अनुभव है, 2008 के वित्तीय संकट के बाद, बहुत से भारतीय निर्यातकों ने जिन्होंने बैंकों के साथ जटिल डेरीवेटिव करार किए थे, उन्हें अपनी डेरीवेटिव स्थितियों को बाजार के साथ संपृक्त करने (मार्क-टु-मार्केट) के कारण भारी हानि उठानी पड़ी थी। इसलिए ही मैंने पहले कहा था कि जटिलता कुछ को ही लाभ देती है और अन्य सभी को चुभती है। अतः कारपोरेट को न केवल उनके द्वारा उठाए जा रहे जोखिमों को समझने की जरूरत है बल्कि उन्हें जोखिम कम करने के लिए उठाई गई गलत प्रक्रिया से उत्पन्न होने वाले जोखिम को भी समझना होगा। इसलिए, व्यापारियों को यह समझना चाहिए कि जोखिम प्रबंधन रणनीति को अतिरिक्त आय कमाने के लिए नहीं अपनाया जाता है अपितु अनुमानित आय के प्रवाह की सुरक्षा करने के लिए उसकी आवश्यकता होती है।

³ सेविंग क्रेडिट- आईआरएमए, आणंद में 25 नवंबर 2014 को आयोजित तीसरे डॉ. वर्गीज कुरियन स्मृति भाषण में डॉ. रघुराम राजन द्वारा की गई चर्चा।

⁴ कांपटीटिव मॉनीटरिंग ईजिंग: इज इट यस्टरडे वन्स मोर?- 10 अप्रैल 2014 को बुकिंग्स इंस्टीट्यूट में डॉ. रघुराम राजन द्वारा की गई टिप्पणी।

पिछले वर्ष जब यूएस फेड ने मात्रात्मक सहजता में कमी लाने के संकेत दिए थे, भारत जैसे उभरती हुई बाजार अर्थव्यवस्थाएं, विशेष रूप से जिनका चालू खाता घाटे में रहता है, पूंजी बहिर्वाह के कारण गंभीर दबाव में आ गई थीं। विदेशी मुद्रा बाजार में अस्थिरता को रोकने के लिए कई उपाय किए गए थे जिनमें, अन्य के साथ-साथ स्वचालित चैनल के तहत पारदेशीय सीधी निवेश सीमा में कमी लाना शामिल था। समष्टि-विवेकपूर्ण उपाय के रूप में इस सीमा को किसी भारतीय कंपनी की नेटवर्थ के 400 प्रतिशत से कम कर 100 प्रतिशत कर दिया गया था हालांकि वास्तविक मामलों में उपरोक्त संशोधित सीमा पर अनुमोदन चैनल के माध्यम से विचार किया गया। इसके अतिरिक्त अत्यधिक वित्तीय बाजार गतिविधियों के अवसरों को कम करने के लिए अन्य कई प्रशासनिक उपाय भी किए गए। राष्ट्रीय तुलन-पत्र को जोखिम रहित बनाने के लिए रिजर्व बैंक और सरकार को कई उपाय करने पड़े, केवल उदाहरण के लिए, स्वर्ण के आयात पर नियंत्रण लगाया गया और विदेशी मुद्रा जमाराशियों तथा बैंकों द्वारा ली जाने वाली उधारियों के जरिए दीर्घकालिक विदेशी मुद्रा स्रोतों से निधि जुटाने के लिए छूट प्राप्त स्वैप सुविधा को प्रारंभ करना।

रुपए-डालर विनिमय दर में स्थिरता लौटने पर पारदेशीय सीधे निवेश के तहत विप्रेषणों पर जो प्रतिबंध लगाए गए थे उन्हें मोटे तौर पर 01 जुलाई 2014 को वापस ले लिया गया और स्वचालित चैनल के तहत पारदेशीय निवेशों के लिए सीमा को भारतीय निकायों की नेटवर्थ के 400 प्रतिशत तक पुनः अनुमति प्रदान कर दी गई। दूसरे शब्दों में, कभी-कभी कारपोरेट संसार को जोखिम से मुक्त करने का कार्य समष्टि-विवेकपूर्ण विनियामक जैसे कि रिजर्व बैंक का बन जाता है, ताकि वृहत्तर चिंताओं, जिन्हें मैंने पहले वर्णित किया है, का ध्यान रखा जा सके।

हानिकारक विचारों और प्रौद्योगिकी के साथ व्यवहार

आइए अब मैं इस सम्मेलन की एक अन्य विषय वस्तु पर विचार करने के लिए मुड़ता हूँ। इसका संबंध हानिकारक विचारों और प्रौद्योगिकी के साथ जुड़ा हुआ है और डिजिटल विश्व द्वारा पेश आ रही उभरती हुई चुनौतियों को तेजी से न समझ पाने के कारण उत्पन्न जोखिम से है। व्यापारी समुदाय के एक संवर्ग के बीच एक प्रकार की असहजता दृष्टिगोचर हो रही है जो कि हानिकारक विचारों और प्रौद्योगिकी के परिणामस्वरूप तेजी से संसार को परिवर्तित कर रही है।

प्राइस वाटर कूपर के एक सर्वेक्षण⁵ के अनुसार, सर्वेक्षण की गई 60 प्रतिशत कंपनियों ने दर्शाया कि, 'प्रौद्योगिकी परिवर्तन की गति' संवृद्धि की संभावनाओं के लिए एक खतरे के रूप में है। दूसरी ओर, विनिर्माण उद्योग इस बात से विशेष रूप से चिंतित है कि अधिकाधिक प्रतिभा और संसाधन वर्चुअल प्लैटफार्म की ओर जा रहे हैं न कि भौतिक विनिर्माण की ओर। इस प्रकार के प्रयासों का मूल्यांकन मनमाना प्रतीत होता है, परंतु एक क्षण के लिए हमें इस तथ्य को भी नहीं भूलना चाहिए कि इस प्रकार हानिकारक प्रयासों के भी अपने जोखिम और अपनी चुनौतियां होती हैं, तथापि, ज्यादा महत्वपूर्ण यह है कि क्या वे अपरिहार्य हैं।

हानिकारक विचारों को जोखिम से बचाव की प्रवृत्ति तनिक भी नहीं सुहाती है और स्टार्ट-अप संस्कृति को देखने से इसके विषय में स्पष्ट रूप से पता चल जाता है जिसके लिए यूएस जाना जाता है और क्यों वह देश अलग नजर आता है तथा तेजी से बदलते आर्थिक चक्रों और उपभोक्ता तरजीहों के बीच नेतृत्व की स्थिति में होता है। सफलता की कुंजी व्यापार के रूपांतरण में निहित है ताकि औद्योगिकीकरण के बाद के डिजिटल विश्व में संगत बना रहा जा सके। हमारे जैसे देशों के लिए हमें इस बात के लिए फिर से आश्चस्त करने की आवश्यकता है कि प्रौद्योगिकी अंततः समावेशी संवृद्धि के जरिए रोजगार के अवसरों को बेहतर करेगी- मात्रात्मक रूप में भी और गुणात्मक रूप में भी- न कि वो रोजगार के अवसर उनसे छीन लेगी और वो जीवन स्तर में वृद्धि करेगी न कि उसे छीन लेगी।

साइबर खतरों का सामना

विशेष रूप से वित्तीय क्षेत्र के लिए इस बात की आवश्यकता है कि वह अपने वर्तमान आईटी परिवेश पर ध्यान दे, क्योंकि ऐसा महसूस किया जा रहा है कि अनेक वित्तीय फर्मों में आईटी की बुनियादी सुविधाएं बिखरी हुई एवं असंगत हैं।⁶ वित्तीय क्षेत्र उद्योग विश्वास और भरोसे पर टिका हुआ है, और बढ़ता हुआ साइबर अपराध इसके लिए बुनियादी चुनौती बन गया है। ब्रिटिश बैंकर्स एसोसिएशन (बीबीए) द्वारा पीडब्लूसी के समन्वय से जारी रिपोर्ट⁷ के अनुसार 'नये-नये विनियमों एवं नीति को अद्यतन रखते हुए साइबर-आक्रमण को रोकना मुश्किल चुनौती बन गया है'।

⁵ प्राइस वाटरकूपर 2014 वार्षिक वैश्विक सीईओ सर्वेक्षण।

⁶ जटिलताओं को सुलझाना - वित्तीय सेवा उद्योग की स्थिति 2015 - ओलिवर वायमैन

⁷ बैंकिंग को साइबर खतरा-विश्व स्तर पर उद्योग को चुनौती

जैसाकि आप जानते हैं कि साइबर-अपराध दिन-प्रतिदिन परिमार्जित एवं जटिल होते जा रहे हैं। उन्हें अंजाम देने वालों को 'संगठित साइबर अपराधी' और 'शत्रु स्टेट एजेंट' के रूप में मोटे तौर पर वर्गीकृत किया जा सकता है। इनका उद्देश्य कुछ भी हो सकता है, कार्पोरेट की जासूसी करने से लेकर धन को उड़ा लेने के लिए बौद्धिक संपत्ति अधिकारों को जानना हो सकता है। इन सब में यदि हम ध्यान से देखें तो इसका पहला हथियार होता है कर्मचारियों का शोषण करना। चूंकि इन्हें आसानी से नहीं जाना जा सकता है इसलिए कार्पोरेट के पास इनसे बचने का एक ही उपाय यह है कि वे उनकी 'साइबर संबंधी समुत्थान-शक्ति' के प्रति पहले से सक्रिय बने रहें।

पिछले वर्ष डाटा चुराने का एक मामला प्रकाश में आया था जो एक विश्व स्तर के निवेश बैंक में हुआ था, उसमें शोचनीय बात यह थी उन्होंने न केवल सुरक्षा का उल्लंघन किया था बल्कि हकीकत यह थी कि वे उनके सिस्टम के भीतर तकरीबन दो महीने से बैठे हुए थे और उनका पता नहीं चल सका था। कार्पोरेट को चाहिए कि वे एक सुदृढ़ कारोबार निरंतरता प्रबंधन (बीसीएम) योजना लागू रखें (जो इस सम्मेलन के अंतिम सत्र का प्रमुख थीम है) और कारोबार पर पड़ने वाले प्रभावों का विश्लेषण करें। कोई भी कार्पोरेट इसे मामूली गैर-परिचालनगत कार्यकलाप के रूप में नहीं ले सकता है क्योंकि इससे जो भारी जोखिम होता है वह केवल मौद्रिक नुकसान ही नहीं बल्कि प्रतिष्ठागत एवं विधिक जोखिम भी होता है जो एक स्थापित कारोबार को पूरी तरह ढहा सकता है।

एक सर्वेक्षण⁸ से पता चलता है कि 41 प्रतिशत आर्थिक अपराध संगठन के भीतर के कर्मचारियों द्वारा किया जाता है। हम इसे कैसे सुलझाएं? क्या हम गंभीरतापूर्वक इस बात का परीक्षण कर सकते हैं कि हमारी कंपनियों में प्रोत्साहन-व्यवहार्यता ढांचा कैसा है? चूंकि जोखिम प्रत्येक कारोबार में निहित होता है, इसलिए उपयुक्त प्रोत्साहन - व्यवहार्यता ढांचे के बिना हमें निर्णय-प्रक्रिया में व्यवहारगत पैटर्न का सामना करना पड़ सकता है, इससे व्यक्ति को जोखिम रहित बनाया जा सकता है बजाय इसके कि ऐसा कोई उपयुक्त निर्णय लिया जाए जो संगठन को फायदा पहुंचाए। इस प्रकार के व्यवहारगत-पैटर्न पूरी कार्यप्रणाली को ठप्प कर सकते हैं और कई बार संगठन के भीतर विस्फोटक कारोबारी बाधाएं बन जाते हैं।

यहां तक कि हम निर्णय लेने की प्रक्रिया में स्त्री-पुरुष की हिस्सेदारी का संतुलन रखने पर विचार कर सकते हैं, जो 'समावेशी' चर्चा का सबसे ज्यादा नजर अंदाज किया गया पहलू है। इस बारे में मुझे एक पत्रकार के प्रश्न का उत्तर देते हुए क्रिस्टीन लेगार्डे की

बात याद आती है। यदि लेहमैन ब्रदर्स आज लेहमैन सिस्टर्स होता तो आर्थिक संकट की स्थिति कुछ और होती। यह बात चुटकुला सी लग सकती है, लेकिन हमने मुहम्मद युनुस की सफलता देखी है जिन्होंने महिलाओं को 'माइक्रो फाइनांस' में तब्दील कर दिया जो आज भी मौजूद है। व्यवहारगत वित्त के बारे में कतिपय अनुसंधान से ज्ञात होता है कि पुरुषों के साथ जरूरत से ज्यादा जोखिम उठाना उनकी शारीरिक मुद्रा के साथ जोखिम उठाने जैसा है।

सावधानी के साथ आशावान रहना

भारत उन्नति की लहर में सबसे आगे है और कारोबारी संस्थाओं के लिए जरूरी है कि वे इस लहर में खरी उतरें लेकिन उन्हें उन जोखिमों के प्रति सचेत रहना होगा जिनका वे स्वयं के लिए और समूची प्रणाली के लिए सामना करने जा रहे हैं। हमारी अर्थव्यवस्था जिस प्रकार के मैक्रो-आर्थिक प्रभावों को झेल रही है उसमें काफी कमी आई है, क्योंकि विकास की संभावनाएं बढ़ गई हैं, महंगाई में कमी हुई है, तेल की कीमतों में तीव्र गिरावट हुई है, बाह्य क्षेत्र में सुधार हुआ है साथ ही विदेशी मुद्रा का भारी भंडार है, वस्तुतः इस समय अब तक का सबसे अधिक विदेशी मुद्रा भंडार लगभग 330 बिलियन अमरीकी डालर हमारे पास है, और सरकार की ओर से भी इस बात के पुख्ता वायदे हैं कि वह राजकोषीय घाटे को नियंत्रित रखेगी। इसका अर्थ यह है कि हम अपने समूह के अन्य देशों से कहीं ज्यादा अच्छी स्थिति में हैं और भविष्य की अनिश्चितताओं और पड़ने वाले प्रभावों का सामना बेहतर तौर पर कर सकते हैं। इतना होने के बावजूद हम संतुष्ट होकर बैठ नहीं सकते, इसलिए हमें अपने दृष्टिकोण के प्रति और अधिक सावधान रहना है और हम किसी भी अन्य देश की तुलना में इस बात के लिए ज्यादा आश्वस्त रहना चाहते हैं कि हमारी अर्थव्यवस्था तथा वित्तीय प्रणाली को इस प्रकार के अनेक प्रभावों से दुबारा दो-चार न होना पड़े।

अन्य शब्दों में, इस समय भारत को पिछले कई वर्षों से जो अवसर प्राप्त हुए हैं उसे वह खोना नहीं चाहेगा, क्योंकि उभरते हुए बाजार की अर्थव्यवस्थाओं में भारत की स्थिति अपेक्षाकृत बहुत मजबूत है। दूसरी ओर, राजनैतिक व्यवस्था उद्योग की चिंताओं के प्रति जागरूक है और 'भारत में निर्माण' का परिदृश्य सरकार और उद्योग के बीच देखने योग्य परिवर्तन लाएगा।

फिर भी, इस देखने योग्य परिवर्तन को सफलापूर्वक कार्यान्वित करने के लिए प्रत्येक उद्योग से कुछ बुनियादी किंतु सैद्धांतिक प्रश्न यह उठते हैं कि 'हमें क्या प्रस्तुत करना है?' 'मेरी प्रमुख क्षमताएं कौन-कौन सी हैं?' और 'मेरी कमजोरियां क्या हैं?' यह एक ऐसा दृष्टिकोण है जो भारतीय उद्योग में मूल्य बढ़ाने के बजाय लागत को नियंत्रण में रखने के लिए होगा जिसका समाधान पहले किया जाना है?

⁸ पी डब्लू सी 2014 विश्व आर्थिक अपराध सर्वेक्षण

‘जोखिम-रहित’ बनने का अर्थ है कि प्रत्येक को अपना लंगर स्वयं तलाशना होगा, अर्थात् वहनीय यूएसपी (विशिष्ट विक्रय पद्धति)। एक विनिर्माण उद्योग जो क्वालिटी से समझौता करते हुए लागत को कम रखने का दर्शन अपनाता है वह अपने लिए मात्र अल्प समय के लिए सहज स्थिति बनाता है।

समापन

मैं कुछ अन्य विचारों के साथ अपनी बात समाप्त करना चाहूंगा। जोखिम को कम करने का एक स्थायी समाधान काफी हद तक यह है कि नेतृत्व ज्ञानी व्यक्ति के हाथों में हो। तरक्की करने के लिए ‘मैं भी’ जैसे कारोबारी मॉडल जो कभी भी तेजी से प्रारंभ नहीं हो पाता और जिसके जबरदस्त व्यवधान प्रभावित होने की आशंका रहती है, से निकलकर ‘ज्ञानपरक नेतृत्व’ के मॉडल अपनाना छलांग लगाने के समान होगा। और इस प्रकार की छलांग के बारे में हमारी शैक्षिक संस्थाओं में, व्यावसायिक या अन्य संस्थाओं में बताया जाना चाहिए। अधिक से अधिक उत्कृष्ट संस्थाओं को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए ताकि वे प्रौद्योगिकी प्रवृत्त करने वाले समूहों के लिए जन्मदाता बन सकें।

इसमें सवाल इस बात का है कि ऐसा क्या है जो हमे नवोन्मेषी उन्मुख ज्ञान-केंद्र को निरंतर वृद्धि करने से रोकता है। ज्ञानपरक नेतृत्व का अर्थ यह नहीं है कि संपूर्ण भारतीय उद्योग को इस मन्थन से सुरक्षित कर लिया जाएगा। क्योंकि अंततः बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ के डव जोन्स सूचकांक और इक्कीसवीं शताब्दी के बीच एक ही कंपनी कॉमन रही है। बल्कि इसका आशय यह होगा कि इस प्रकार के नेतृत्व से किसी उद्यम में असफल कोई एक होगा लेकिन विजेता कई होंगे।

मैं आपको शुभकामना देता हूँ और उम्मीद करता हूँ कि ‘जोखिम विश्लेषण’ से लेकर ‘विनियामकीय जोखिम’ तक और ‘डिजिटल फोरोन्सिक’, ‘भावी कार्य-स्थल से होने वाले जोखिम’ तथा अंततः ‘जलवायु परिवर्तन और जोखिम वहनीयता’ जैसे विषय विषय की थीम पर सार्थक चर्चाएं की जाएंगी और मुझे विश्वास है कि सम्मेलन के समापन पर आप कुछ ऐसी कार्यशील रणनीति लेकर आएंगे जिनसे आप अपने कारोबार के जोखिम को बेहतर तरीके से नियंत्रित कर सकेंगे।

आप सभी को धन्यवाद।